सबसे पहले ज्ञानार्जन

स्वामी अपूर्वानन्द

सन् १९७५ के अक्टूबर में, जब मैं कैलिफ़ोर्निया स्थित, स्टॉक्टन शहर के सॅन वॉकेन काउन्टी जनरल हॉस्पिटल में चिकित्सा सम्बन्धी प्रशिक्षण [इन्टर्नशिप] ले रहा था, तब मुझे एक शक्तिपात ध्यान-शिविर में बाबा मुक्तानन्द से शक्तिपात दीक्षा मिली और मेरे जीवन ने एक बहुत बड़ा सकारात्मक मोड़ लिया। मैंने बड़े उत्साह से अपने आपको सिद्धयोग साधना करने के प्रति समर्पित कर दिया। चिकित्सा सम्बन्धी गतिविधियों के बीच जब भी मुझे समय मिलता तो मैं एक-एक पल का सदुपयोग करता—बाबा जी की पुस्तकें पढ़ता, नामसंकीर्तन करता और ध्यान करता। साथ ही, जब भी मैं अपनी व्यस्त दिनचर्या में से समय निकाल पाता, तब बाबा जी का सान्निध्य पाने के लिए ओकलैन्ड के सिद्धयोग आश्रम चला जाता।

सन् १९७६ के आरम्भ में वह समय निकट आ रहा था जब मुझे यह निर्णय लेना था कि मुझे चिकित्सा के किसी विशेष क्षेत्र में अपनी पढ़ाई जारी रखनी है या नहीं, और यदि हाँ, तो कौन-से क्षेत्र में। और उसी समय मुझे पता चला कि उसी वर्ष पतझड़ के दौरान बाबा जी और बहुत-से सिद्धयोगी गुरुदेव सिद्धपीठ में रहने के लिए जम्बो जॅट से भारत जाने वाले हैं। मैं तय नहीं कर पा रहा था कि मैं इन दोनों में से क्या करूँ।

अतः मैंने एक पत्र लिखकर बाबा जी से पूछा, "बाबा जी, मैं विशेषज्ञता हासिल करने के लिए सामान्य चिकित्सा में आगे पढ़ाई करूँ या मनोरोग चिकित्सा में, या फिर पहले जम्बो जॅट से आपके साथ भारत चलूँ?" बाबा जी का जो भी आदेश हो, उसके आगे "समर्पण" कर देने के लिए मैंने अपने आपको तैयार कर लिया था।

कुछ सप्ताह पश्चात्, मुझे अपने पत्र का उत्तर मिला। बाबा जी के सेक्रेटरी ने लिखा कि मेरे प्रश्न के उत्तर में बाबा जी ने कहा है, "सबसे पहले ज्ञानार्जन।" मैं बाबा जी के उत्तर पर जितना अधिक मनन करता हूँ, यह मेरे लिए उतना ही व्यापक और गहन होता जाता है। केवल तीन शब्दों में बाबा जी ने कितना कुछ कह दिया था।

उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि जहाँ तक अपने जीवन के इस व्यावहारिक विकल्प को चुनने का प्रश्न है, यह निर्णय खुद मुझे ही लेना होगा। चिन्तन-मनन द्वारा, मुझे श्रीगुरु के प्रति समर्पण विषयक एक सिखावनी की समझ भी मिली है : समर्पण का अर्थ गुरु से अपने जीवन की व्यावहारिक बातों के

लिए निर्णय लेने को कहना नहीं है, बल्कि इससे बढ़कर, समर्पण का अर्थ है, गुरु की सिखावनियों को आत्मसात् करना।

उस प्रथम ध्यान-शिविर में मुझे जो अन्तर-समझ मिली थी, बाबा जी का उत्तर बिलकुल वैसा ही था। जब बाबा जी ने मुझे शक्तिपात दिया तो मुझे ऐसे प्रेम की अनुभूति हुई थी जो असीम आनन्द से इतना भरा हुआ और इतना व्यापक था जिसकी अनुभूति मुझे इससे पहले कभी नहीं हुई थी। उस अनुभव ने मुझे निस्सन्देह यह दृढ़ विश्वास दिया कि अब मेरे जीवन का उद्देश्य है, यह सीखना कि प्रेम की उस स्थिति में हर समय कैसे रहा जाए। इस उद्देश्य को व बाबा जी की सिखावनी को अपने बोध में रखने से मेरे लिए निर्णय लेना आसान हो गया।

बाबा जी द्वारा दिए गए उत्तर पर चिन्तन करने के बाद, मैंने पहले जम्बो जॅट में अपने स्थान के आरक्षण के लिए आवेदन भेजा। मुझे साफ़-साफ़ समझ में आ गया था कि अपने जीवन में उस समय जिस प्रकार का ज्ञान मेरे लिए महत्त्वपूर्ण था, वह था—बाबा जी की सिखावनियों के अध्ययन व उनका परिपालन करने से उभरने वाला ज्ञान।

बाबा जी की सिखावनी, "सबसे पहले ज्ञानार्जन" जीवन भर मेरे अन्दर सतत सीखते रहने की, ज्ञान अर्जित करने की प्रतिबद्धता को जगाती रही है—अपने श्रीगुरु की सिखावनियों व भारत के शास्त्रों का निरन्तर अध्ययन करने के लिए और साथ ही ऐसे तरीक़े खोजने के लिए भी, जिससे मैं अपनी सेवा को अधिक कुशलता व दक्षता से कर सकूँ।

छियालीस वर्षों से भी अधिक समय से, बाबा जी की इस तीन शब्दों वाली सिखावनी "सबसे पहले ज्ञानार्जन" ने जीवन की हर परिस्थिति व हर पहलू में मेरा मार्गदर्शन किया है।

इसके लिए मैं सदैव बाबा जी के प्रति कृतज्ञ रहूँगा।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।